अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : बारहवीं – जैन सिद्धान्त शास्त्री (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) आचारांग में कितने उद्देशनकाल कहे गए हैं-

(क) 02 (ख) 25

(ग) 85 (घ) 18000 ( )

(b) आचारांग में निम्न में से किस अध्ययन में मुख्य रूप से भगवान महावीर की साधना का वर्णन हैं-

(क) अवधानश्रुत (ख) उपधानश्रुत

(ग) व्यवहार श्रुत (घ) आचार श्रुत ( )

(c) जीव अरूपी होने के साथ किस गति वाला होता है-

(क) प्रतिहत (ख) अप्रतिहत

(ग) प्रतिहत-अप्रतिहत (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं ( )

(d) राजा परदेशी समय-समय पर किससे परामर्श करता था-

(क) जितशत्रु राजा (ख) सूर्यकान्त राजा

(ग) सूर्यकान्ता रानी (घ) चित्त सारथि ( )

(e) जिसके उदय से निद्रा से जागना अत्यन्त कठिन हो, कौनसी निद्रा कहलाती है-

(क) निद्रा (ख) स्त्यानगृद्धि

(ग) निद्रा-निद्रा (घ) प्रचला-प्रचला ( )

(f) संज्वलन कषाय किसका घात करता है-

(क) सामायिक चारित्र (ख) यथाख्यात चारित्र

(ग) छेदोपस्थापनीय चारित्र (घ) परिहारविशुद्धि चारित्र ( )

(g) भाव की विशुद्धि है-

(क) मार्दव (ख) क्षमा

(ग) आर्जव (घ) शौच ( )

(h) सम्यग्दृष्टि तिर्यञ्च तथा मनुष्य कौनसी आयु का बन्ध करते हैं-

(क) नरकायु (ख) तिर्यंचायु

(ग) मनुष्यायु (घ) देवायु ( )

(i) सातवीं नारकी में समुच्चय बन्ध कितनी प्रकृतियों का होता है-

(क) 100 (ख) 99

(ग) 101 (घ) 96 ( )

(j) 'अच्छ' क्रिया का हिन्दी अर्थ होता है-

(क) उठना (ख) बैठना

(ग) ढकना (घ) चलना ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) अर्थात्मक ग्रन्थ के प्रणेता तीर्थंकर हैं। ( )

(b) द्वादशांगी त्रिपदी का विस्तार है, इसलिए वह गणधरकृत भी है। ( )

(c) वर्तमान में दोनों श्रुतस्कन्ध रूप आचारांग का पद परिमाण 2600 श्लोक प्रमाण है। ( )

(d) दर्शन या वाणी से दूसरों को पराजित कर देने वाला कर्म पराघात है। ( )

(e) अन्तराय कर्म के कारण अलाभ परीषह होता है। ( )

(f) ज्ञान, दर्शन, चारित्र और उपचार, ये व्यत्सर्ग तप के चार भेद हैं। ( )

(g) पाँच अनुत्तर विमान में केवल चौथा गुणस्थान पाया जाता है। ( )

(h) तेउकाय, वायुकाय में प्रथम गुणस्थान में 101 प्रकृतियों का बन्ध होता है। ( )

(i) औदारिक मिश्र काय योग में तेरहवें गुणस्थान में 75 प्रकृतियों का बन्ध होता है। ( )

(j) विषय के बारे में, अर्थ में तथा समय बोधक शब्दों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(a)	बोद्ध	(क) तीर्थंकर	.....
(b)	पारसी	(ख) आम्नाय	.....
(c)	ईसाई	(ग) शैक्ष	.....
(d)	इस्लाम	(घ) अप्रमत्त संयत	.....
(e)	धर्मध्यान	(च) त्रिपिटक	.....
(f)	नवदीक्षित अध्ययनशील साधु	(छ) अवेस्ता	.....
(g)	स्वाध्याय का एक भेद	(ज) बाईबिल	.....
(h)	आठ प्रत्येक प्रकृति में से एक	(झ) 13	.....
(i)	आहारक में गुणस्थान	(य) कुरान	.....
(j)	क्षायिक में गुणस्थान	(र) 11	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a) हम अंग बाह्य आगमों की रचना करते हैं। .....

(b) मैं व्यक्ति के सुखात्मक एवं दुःखात्मक जीवन का आधार रूप बन्धन हूँ। .....

(c) जैसे अग्नि जीर्ण लकड़ियों को नष्ट कर देती है, उसी प्रकार व्यक्ति मुझे नष्ट कर देता है। .....

(d) मैं दिशा, अनुदिशा और विदिशाओं में संचरण करने वाली परिणामी और स्वभाव से शाश्वत आत्मा में विश्वास करने वाला हूँ। .....

(e) मैं एक ऐसा निर्ग्रन्थ हूँ, जिसमें सर्वज्ञता प्रकट हो गई है। .....

(f) मैं एक ऐसा द्वीप हूँ, जिसमें जम्बूद्वीप, धातकीखण्डद्वीप और पुष्करवरार्धद्वीप निहित है। .....

(g) मैं दर्शन या वाणी से दूसरों को पराजित कर देने वाला नाम कर्म का एक भेद हूँ। .....

(h) मैं एक ऐसी उत्कृष्ट पुण्य प्रकृति हूँ, जिसका बंध तिर्यञ्च गति में होता ही नहीं है। .....

(i) मैं ज्ञान का एक भेद हूँ, जिसमें कुल दो गुणस्थान पाए जाते हैं। .....

(j) मैं ऐसी लेश्या हूँ, जिसमें सात गुणस्थान एवं समुच्चय बन्ध 108 प्रकृतियों का होता है। .....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिएः- **12x2=(24)**

(a) आचारांग को अंगों के क्रम में प्रथम स्थान देने का क्या कारण है ?

.....

.....

.....

(b) किस मुनि के लिए एकाकी विचरण वर्जनीय बताया है ?

.....

.....

.....

(c) व्यक्ति जन्म-मरण और संसार के दुःखों की चक्की में क्यों निरन्तर पिसता रहता है ?

.....

.....

.....

(d) हिंसा का मूल क्या है ?

.....

.....

.....

(e) 'जे गुणे से आवट्टे जे आवट्टे, से गुणे' इसका अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

(f) **आत्मा के साथ बन्ध को प्राप्त होने वाले कर्म स्कन्ध कैसे होते हैं ?**

.....

.....

.....

(g) **शुभ व शुभग में अन्तर स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

(h) **ऐसी कौनसी उत्तर प्रकृतियाँ है जिनका परस्पर संक्रमण संभव नहीं हैं ?**

.....

.....

.....

(i) **4,5,6 नरक में किन-किन गुणस्थानों में कितनी-कितनी प्रकृतियों का बन्ध होता है ?**

.....

.....

.....

(j) **असन्नी में कौनसे गुणस्थान पाये जाते हैं तथा उनमें कितनी-कितनी प्रकृतियों का बन्ध होता है?**

.....

.....

.....

(k) **'गाय में शक्ति होती है' इस वाक्य का प्राकृत भाषा में रूपान्तर कीजिए।**

.....

.....

.....

(l) **'स्वामी का पुत्र जागता है' इस वाक्य का प्राकृत भाषा में रूपान्तर कीजिए।**

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **12x3 = (36)**

(a) **कौनसा साधक चार घाती कर्मों का क्षय कर अन्त में जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो निरंजन-निराकार, सच्चिदानन्द स्वरूप सिद्धत्व को प्राप्त करता है ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) **''अरति आउट्टे से मेधावी खणंसि मुक्के'' इसका अर्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(c) **''अग्गं च मूलं च विगिंच धीरे, पलिछिंदियाणं णिक्कम्मदंसी'' का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(d) **नारकी जीवों के मनुष्य लोक में नहीं आने के क्या-क्या कारण हैं ? समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **छद्मस्थ जीव कौनसी दस वस्तुओं को देख नहीं पाता ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

निम्न सूत्रों की व्याख्या कीजिए-

(f) **मत्यादीनाम्।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षा परीषहजय चारित्रैः।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **मार्गाऽच्यवन-निर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(i) **तदनन्तर-मूर्ध्व-गच्छत्यालोकान्तात्।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(j) **औदारिक मिश्रकाय योग में पाए जाने वाले गुणस्थान एवं बन्ध योग्य प्रकृतियाँ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(k) **मनुष्य लब्धि पर्याप्तक में पाए जाने वाले गुणस्थान एवं बन्ध योग्य प्रकृतियाँ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(l) **सन्धि किसे कहते हैं ? सन्धि के प्रकार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....